ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 176-177

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

स्त्रीअस्मिता की नई तलाशः नव–वामपंथी कवियों के झरोखे से

षैजू के

शोध अध्येता, हिन्दी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चि (केरल) भारत

Received- 30.11.2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: shyjukas@gmail-com

सारांश : *19वीं शताब्दी के चौथें दशक में जब मार्क्स ने ''इकोनॉमिक एंड फिलोसॉफिकल मैन्यू स्क्रिप्ट मार्क्स'' में मानव मुक्ति के प्रश्न को दार्शनिक रूप से समझाना शुरू किया, तो उनके पास फूरिये और सेंट साइमन के स्त्रीमुक्ति संबंधी विचारों की समृद्ध धरोहर थी। उनके पास औरत की आजादी के लिए 17वीं और 18वीं सदी मे पितृसत्ता, विवाह और परिवार की संस्था की जकड़ के खिलाफ तथा समता मूलक प्रेम व यौन जीवन के पक्ष में लड़ी गई लड़ाई और महिला कार्यकर्ताओं व नेताओं के त्याग और बलिदान का प्रेरक इतिहास था। यूटोपियन और रोमानी समाजवाद के बीज विचारों से प्रभावित युवा मार्क्स ने अपनी दार्शनिक निष्पत्ति में औरतों की हालत को समाज और प्रकृतिकी हालत का प्रतीक बनाया। इस तरह उनका मशहूर कथन प्रकाश में आया जिसका आशय यह था कि अगर किसी समाज में पर्यावरण और पारिस्थिति की की हालत को समझना है तो उस समाज में औरतों की स्थिति को देख लेनी चाहिए। नव–वामपंथी कवियों ने औरत की बुरी हालत जाना और पहचाना तथा अपनी लेखनी के जरिए साहित्य में दर्शाया। आज तक दुनिया भर में नव–वामपंथी कार्यकर्ता नारीवादियों द्वारा मार्क्सवाद पर किए जाने वाले हमलों के जवाब में मार्क्स की इस उक्ति को अपने रक्षाकवच के रूप में इस्तेमाल करते हैं।*

कुंजी शब्द– दार्शनिक, स्त्रीमुक्ति, पितृसत्ता, संस्था, समतामूलक, जकड़, यौनजीवन, कार्यकर्त्ता, बलिदान, रक्षा कवच

''मैं यह नहीं कहना चाहती थी कि अगर वे (मार्क्स और एंगेल्स) औरत होते तो वे नारी मुक्ति की समस्या का अंतिम हल पेश कर देते। लेकिन यह एक तथ्य है कि वे औरतों को पुरुष की आंखों से देखने के लिए मजबूर थे। वे मजदूर वर्ग की औरतों को एक मध्य वर्गीय पुरुष की निगाह से देखते थे। इसका असर पड़ना ही था। उन्होंने जिस तरह देखा और जहां देखा, उस पर उनके पुरुष होने का प्रभाव पड़ा।''1

नव–वामपंथी कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने मार्मिक विचारों को प्रस्तुत कर 'स्त्री विमर्श' को साहित्य में दर्शाया है। वे नारी को शोषित, उपेक्षित, सामाजिक रूप से अनेक स्थलों पर घृणित और लांछित दशा देखकर उसके सामाजिक पक्षों के विकास की अनिवार्यता जताने का प्रयत्न किया है।

मंगलेश डबराल एक प्रमुख नव–वामपंथी कवि हैं। उनमें स्त्री जाति के प्रति गहरी आस्था है। वे उनके भीतर छिपी हुए दुखों को बहुत सी करुणा की आवास में पुकारते हैं। 'स्त्रियां', 'तारे के प्रकाश की तरह', 'तुम्हारे भीतर' और 'लड़की और अंधाआदमी' ऐसी कविताएं है जिनमें भारतीय स्त्री की संघर्षभरी कहानी तथा जीवनशक्ति को पकड़ने का सार्थक प्रयत्न किया गया है। 'स्त्रियां' कविता तो बेजोड़ कविता है जिसमें स्त्री का दुख, उसका संघर्ष, उसका प्रेम, त्याग जो आत्मादान की हृदत काव्यंजित होता है। भारतीय पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में नारी को भोग्य बनाकर, सुचिता का आदर्श रखकर पतिव्रत धर्म का उपदेश देकर समाज ने उसे खूब छला है।

''एक आंख से हंसती एक से रोती हुई, वह फिर से आ पहुंचती है, पुरुष के सामने जैसे उसका कुछ न छीना गया हो जैसे वह उसी तरह करती आ रही हो प्रेम।''2

ठस कविता में जीवन में बार–बार छली जाने के बावजूद भी स्त्री अंतः प्रेम में बसा हुआ घर चाहती है।

बोधिसत्व अपनी आवाज को धरती की आवास बनाकर जीवन के कुछ ऐसे बुनियादी सवालों की ओर शोषितों एवं दलितों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जिसे पाने के लिए वे वर्षों से चुप हैं। कवि उन आंखों में अपने को खोजता है, जिनकी आंखों में जीवन की कोई आकृति बनी ही नहीं। बोधिसत्व समाज की इस अमानवीय हालत के जिम्मेदार लोगों का मुकाबला करने के लिए मजदूरों औरतों को ललकारते हैं–

'' हम अपने देश के रक्तखोरों को जुबान देते हैं कि हम लड़ें बगैर नहीं मरेंगे। हम अपने बाप के बूंद की कसम लेते हैं कि हर हालत में धधकाये रखेंगे मजदूर औरतों की छाती की आग।''3

मंगलेश डबराल ने औरत के आंतरिक दर्द को पहचाना है। उसका बिखरा हुआ घर, बहता हुआ जल और खाए बिना खाने का खत्म होना' प्रेम करती स्त्री' कविता में उभारा हैं–

'' प्रेम करती स्त्री ठगी जाती है, रोज उसे पता नहीं चलता बाहर क्या हो रहा है कौन ठग रहा है कौन है खलनायक पता नहीं चलता कहां से शुरू हुई कहानी।''4

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

बोधिसत्व की 'स्त्री', 'तुम्हारे पास', 'मां का नाच', 'वह चाहती थी' आदि कविताओं में भीख मांगती स्त्री, मायका और ससुराल में जुल्म की शिकार नारी, एक श्रमिक हल वाहे की पत्नी की वेदना आदि को अभिव्यक्ति दी गई है –

''वह नाचती रही बिलखते हुए धरती के इस छोर से उस छोर तक समुद्र की लहरों से लेकर जुते हुए खेत तक सब भरे थे। उसकी नाच की धमक से सब में समाया था उसका बिलखता हुआ गाना।''5

मंनदि है, जो जीवन के कछारों को उर्वर बनाती है। वह धान की एक बाली के समान है जो धूप, पानी और हवा में पकाती है, दूध सा कच्चा हमारा जीवन। मां सहती है, सब कुछ पर कहती कुछ भी नहीं। ''अब खाट से उठेंगे मां के दुःख और लंबे लंबे डग भरकर कहीं गाय बहो जाएंगे और जो बचेंगी छोटी छोटी तकलीफें उन्हें बड़ियों की तरह वह टांग देगी घर की खपरैल पर।''6

कात्यायनी पिंजडा, जाल और यंत्रणा गृहों में कैद जीवन की फडफडाहट, अकुलाहट, विवशता और मजबूरी को भलीभांति जानती हैं। नारी भी सदियों से उस पर तंत्रता की पीड़ा को सहती और भोगती आ रही है। समाज ने उसे वैसा ही दर्द युगों युगों से दिया है, जिसे उसने चुपचाप होगा, सहा और जिया है। अब वह स्वयं उसे व्यक्त कर रही है, जाहिर है कि उसकी अभिव्यक्ति में भोगे हुए कटु जीवन यथार्थ की आंचदाह कहोगी –

''जिंदगी की सरहदों में लप लपाती रहती है अग्नि की लाल जिह्वाएं मृत्यु में ही मुक्ति देखती है स्त्री बार–बार बरती है उसे।''7

इतिहास गवाह है कि नारी विभिन्न सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं, पारिवारिक यंत्रणाओं, मजबूरियों आदि का शिकार होकर स्वयं को सदियों से हवन करती चली आ रही है। उसके हर कदम पर नजर रखी जाती है।' सात भाइयों के बीच चंपा' कविता में चंपा के टूटते बिखरते सपने को देखती हैं। ये सपने कवयित्री के बचपन के हैं–

''बाप की छाती पर सांप सी लोटती सपनों में काली छाया सी डोलती सात भाइयों के बीच चंपा सयानी हुई।''8

नारी उत्पीड़न तथा यातनामयी जीवन का ज्वलंत चित्रण 'अगले दिन' कविता में हुई है। इसमें बलात्कार की शिकार हुई, औरत का चित्रण किया गया है –

''अगले दिन उसके भीतर कितने झडें हुए कितने पत्ते अगले दिन मिलेगी खुरों की छाप अगले दिन अपनी देह लगेगी बेकार आत्मा हो जाएगी असमर्थ कितने कीचड़ कितने खून से भरी रात होगी, उसके भीतर अगले दिन।''9

ठस कविता में मंगलेश डबराल ने नारी उत्पीड़न तथा उसकी यातनामय नरक सदृश जीवन के प्रति गहरी चिंता प्रकट की है। भारत के संविधान में स्त्रियों को पुरुषों के समानता और स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है, किन्तु व्यवहारिक जीवन में समानता और स्वतंत्रता स्त्री के संदर्भ में केवल नारे भर हैं। दहेज प्रथा के विरोध में अनेक कानून बनाए जाने के बावजूद आज की तमाम स्त्रियां दहेज के नाम पर आए दिन जलादी जाती है। सविता सिंह की कविता इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं–

''नमन करूं इस देश को जहां मार दी जाती है हर रोज ढ़ेर सारी औरतें जहां एक औरत का जीवित रहना एक चमत्कार की तरह है।''10

अतः नव–वामपंथी कवि नारी के लिए भारतीय संस्ति से पृथ्वी का मिथ लेता है, जिसमें उसे 'क्षमया धरत्री' या 'सर्व सदा' कहा गया है। वह नैतिकता, मर्यादा और सामाजिकता के बोझ से दबी हुई पुरुषों के अत्याचार को खुलकर प्रतिरोध करते हैं। राजेंद्र यादव ने कहा था– ''स्त्रियां हमारे भविष्य की उभरती हुई शक्तियां है।''11 भारतीय समाज में अब लड़कियों के प्रति लोगों की मानसिकता में धीरे–धीरे बदलाव आ रहा है फिर भी उसे परिवार में दो यमदर्जे का नागरिक, बेचारी, पराया धन के रूप में जाना जाता है। नव–वामपंथी कवियों ने नारी को शक्ति का रूप माना और साहित्य के माध्यम से उनमें नवीन चेतना, ओज, स्फूर्ती और शक्ति का संचार करने का प्रयत्न किया। स्त्री विमर्श के अंतर्गत उसकी दशा अवदशा के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है और आज भी लिखा जा रहा है। इस प्रकार नव–वामपंथी कवि नारी को उसका वास्तविक अधिकार दिलाना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शीलारो बांथम–डायलेटिकल डिस्टरबेंसिज–पृ.38।
2. मंगलेश डबराल –आवास ही एक जगह है–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000–पृ.29।
3. बोधिसत्व –सिर्फ कवि नहीं, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद –पृ.68।
4. मंगलेश डबराल –आवास ही एक जगह है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000–पृ.27।
5. बोधिसत्व –हम जो नदियों का संगम है, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद –पृ.33।
6. एकांत श्रीवास्तव –अन्न है मेरे शब्द, आधार प्रकाशन, हरियाणा,1994 –पृ.53।
7. कात्यायनी –सात भाइयों के बीच चंपा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1994–पृ.15।
8. कात्यायनी– सात भाइयों के बीच चंपा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1994–पृ.21।

*****